AUS2A10a-hindoustani-2012-12-10-बौद्ध धर्म और संस्कृति

बौद्ध धर्म

बौद्ध-धर्म भारत की श्रमण-परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है। इसकी स्थापना गौतम बुद्ध ने की। वे छठवीं से पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक जीवित थे। उनकी मृत्यु के बाद अगली पाँच शताब्दियों में बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैला। आज बौद्ध धर्म में तीन मुख्य सम्प्रदाय हैं - थेरवाद, महायान और वज्रयान। बौद्ध धर्म के अनुयायी पैंतीस करोड़ से अधिक लोग हैं और यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। जिस किसी ने सालों के ध्यान के बाद यथार्थता का सत्य पहचान लिया हो उसे 'बुद्ध' कहा जाता है। बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है इस दुःख भरे अस्तित्व का अंत। बुद्ध ने कहा है कि "मैं केवल एक ही बात सिखाता हूँ जो है – 'दुःख' और 'दुःख का निरोध'।"

कहा जाता है कि सिद्धार्थ की माता उनके जन्म के कुछ देर बाद मर गईं। जब उनका नाम रखने के लिये ऋषि आए तो उन्होंने 2 सम्भावानाएँ बताईं – या तो सिद्धार्थ महान राजा बनेगा या फिर एक महान साधु। इस भविष्य-वाणी को सुनकर राजा ने सिद्धार्थ को दुःखों से दूर रखने की कोशिश की। लेकिन 29 वर्ष की उम्र में उन्हें चार दृश्य देखने को मिले - (1) एक बूढ़ा अपाहिज आदमी (2) एक बीमार आदमी (3) एक लाश तथा (4) एक साधु। इन चार दृश्यों को देखकर सिद्धार्थ समझ गये कि सब का जन्म होता है, सब को बुढ़ापा आता है, सब को बीमारी होती है, और एक दिन सब की मौत होती है। उन्होंने अपना धनवान जीवन, अपनी जाति, अपनी पत्नी, अपने बच्चे आदि को छोड़कर साधु का जीवन अपना लिया ताकि वे जन्म, बुढ़ापे, दर्द, बीमारी, और मौत के बारे में कोई उत्तर खोज पाएँ।

सिद्धार्थ इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए कुछ साथियों को लेकर सत्य की खोज में निकल पड़े। ऐसे करते-करते छह वर्ष बीत गए लेकिन उन्हें प्रश्नों का उत्तर न मिला। एक दिन वे आनंदमय ध्यान में लीन हो गए और उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि समय 'स्थिर' हो गया है। इस कठोर तपस्या को छोड़कर उन्होंने 'आर्य अष्टांग मार्ग' ढूँढ़ निकाला। सत्य की खोज की प्रतिज्ञा कर वे एक पीपल के पेड़ (जो अब बोधि पेड़ कहलाता है) के नीचे बैठ गये। 35 की उम्र पर उन्हें 'बोधि' प्राप्त हुई और वे बुद्ध बन गये। अपने बाकी के 45 वर्षों में गौतम बुद्ध ने गंगा नदी के आस-पास अपना धर्मोपदेश दिया। उन्होंने दो सन्यासी-संघों की भी स्थापना जिन्होंने बुद्ध के धर्मोपदेश को फैलाना जारी रखा।

चार आर्य सत्य

(1) दुःख – इस दुनिया में सब कुछ दुःख है। जन्म में, बूढे होने में, बीमारी में, मौत में, अपने प्रियतम से दूर होने में, नापसंद चीज़ों के साथ में, अपनी चाही हुई चीज को न पाने में, सब में दुःख है। (2) दुःख का आरंभ – दुःख का कारण 'तृष्णा' या कुछ प्राप्त करने की इच्छा ही है और फिर से सशरीर करके संसार को जारी रखती है। (3) दुःख का निरोध – 'तृष्णा' से मुक्ति पाई जा सकती है। (4) दुःख निरोध का मार्ग – 'तृष्णा' से मुक्ति आर्य अष्टांग मार्गों के अनुसार जीने से पाई जा सकती है।

आर्य अष्टांग मार्ग

(1) सम्यक दृष्टि : चार आर्य सत्यों में विश्वास करना
(2) सम्यक संकल्प : मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना
(3) सम्यक वाक : हानिकारक बातें और झूठ न बोलना
(4) सम्यक कर्म : अनुचित कर्म न करना
(5) सम्यक जीविका : कोई भी स्पष्टतः या अस्पष्टतः हानिकारक व्यापार न करना
(6) सम्यक प्रयास : अपने आपको सुधारने की कोशिश करना
(7) सम्यक स्मृति : स्पष्ट ज्ञान की मानसिक योग्यता प्राप्त करने की कोशिश करना
(8) सम्यक समाधि : निर्वाण पाना

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन एक भारतीय त्यौहार है जो हर साल श्रावण महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाई के दायें हाथ में राखी बाँधकर उसके माथे पर तिलक करती हैं और उसकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। बदले में भाई उनकी रक्षा का वचन देता है। ऐसा माना जाता है कि राखी के रंग-बिरंगे धागे भाई-बहन के प्यार के बन्धन को मज़बूत करते हैं। यह एक ऐसा त्यौहार है जो भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को बढ़ाता है। वैसे तो राखी कच्चे सूत की होती है लेकिन यह रंगीन कलावे, रेशमी धागे, तथा सोने या चाँदी जैसी मँहगी धातुओं की भी हो सकती है। आम तौर पर बहनें ही भाई को राखी बाँधती हैं, लेकिन कुछ जगहों पर ब्राह्मणों, गुरुओं को भी छोटी लड़कियाँ राखी बाँधती हैं। कभी-कभी सार्वजनिक रूप से किसी नेता या जाने-माने व्यक्ति को भी राखी बाँधी जाती है। सगे भाई-बहन के अलावा कई भावनात्मक रिश्ते भी इस त्यौहार से जुड़े हो सकते हैं जो धर्म, जाति और देश की सीमाओं से परे होते हैं। यहाँ तक कि आजकल वृक्षों को भी राखी बाँधने की परम्परा शुरु हो गयी है। हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुरुष सदस्य परस्पर भाईचारे के लिये एक दूसरे को भगवा रंग की राखी बाँधते हैं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में जन जागरण के लिये भी इस पर्व का सहारा लिया गया। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बंग-भंग का विरोध करते समय रक्षाबन्धन त्यौहार को बंगाल निवासियों के पारस्परिक भाईचारे तथा एकता का प्रतीक बनाकर इस त्यौहार का राजनीतिक उपयोग आरम्भ किया।

मुहर्रम

मुहर्रम इस्लाम धर्म में यकीन करने वाले लोगों का एक प्रमुख त्यौहार है। सन् 680 में इसी माह में कर्बला (ईराक) नामक जगह में एक धर्म-युद्ध हुआ था, जो पैगम्बर हजरत मुहम्मद स० के नाती तथा यजीद (पुत्र माविया पुत्र अबुसुफियान पुत्र उमेय्या) के बीच हुआ। इस धर्म-युद्ध में वास्तविक जीत हज़रत इमाम हुसैन की हुई। पर जाहिरी तौर पर यजीद के कमांडर ने हज़रत इमाम हुसैन और उनके सभी 72 साथियों को शहीद कर दिया था। जिसमें उनके छह महीने की उम्र के बेटे हज़रत अली असग़र भी शामिल थे। और तभी से तमाम दुनिया के न सिर्फ़ मुसलमान बल्कि दूसरी क़ौमों के लोग भी इस महीने में इमाम हुसैन और उनके साथियों की शहादत का ग़म मनाकर उनकी याद करते हैं। आशूरे के दिन एक ऐसी घटना हुई थी, जिसका विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इराक स्थित कर्बला में हुई यह घटना दरअसल सत्य के लिए जान न्यौछावर कर देने की जिंदा मिसाल है। इस घटना में हजरत मुहम्मद के नाती हजरत हुसैन को शहीद कर दिया गया था। बुजुर्ग कहते हैं कि इसे याद करते वक़्त भी हमें हजरत मुहम्मद का तरीका अपनाना चाहिए। जब कि आज आम लोगों को दीन की जानकारी न के बराबर है। वे अल्लाह के रसूल वाले तरीकों से लोग वाकिफ नहीं हैं। ऐसे में हजरत मुहम्मद की बताई बातों पर गौर करने और उन पर सही ढंग से अमल करने की ज़रूरत है। इमाम और उनकी शहादत के बाद सिर्फ उनके एक बेटे हजरत इमाम ज़ैनुलआबेदीन, जो कि बीमारी के कारण युद्ध में भाग न ले सके थे, बच पाए। दुनिया में अपने बच्चों का नाम हज़रत हुसैन और उनके शहीद साथियों के नाम पर रखने वाले अरबी लोग मुसलमान हैं। इमाम हुसेन की औलादें, जो सादात कहलाती हैं, दुनियाभर में फैली हुई हैं।